Hindi Honours.

व्याख्या

1. उद्धरण —
2. कवि परिचय —
3. प्रसंग —
4. सरलार्थ —
5. भावार्थ —
6. कठिन शब्दों के अर्थबोध —

"महत्वकांक्षा के मोती निष्ठुरता के सीपी में रहता है"

उद्धरण — प्रश्नांकित व्याख्येय पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक "चन्द्रगुप्त नाटक" से उद्धृत है। इसके कवि जयशंकर प्रसाद जी है। ये छायावादी राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं।

कवि परिचय — राष्ट्रहित में सोचने वाले "जयशंकर प्रसाद

Hindi Honours.

छायावादी काव्यधारा के अग्रगण्य कवि हैं। इनकी रचनाओं में प्रेम, शांति एवं राष्ट्रीयता की त्रिवेणी बहती है। इनकी कविताओं में राष्ट्रीयप्रेम की उद्घोषणा हुई है।

प्रसंग — जयशंकर प्रसाद अपने नाटक "चन्द्रगुप्त" में इतिहास को सहारा और अंग्रेजों पर निशाना किये हैं। जिस समय इस नाटक का सृजन हो रहा था उस समय स्वतंत्रता के लिए भारतवासी संघर्ष कर रहे थे। उसी को केन्द्र में रखकर प्रसाद जी अपने नाटकों के माध्यम से आग में घी डालने का काम किया यह पंकित चाणक्य द्वारा चन्द्रगुप्त को कहा गया है।

सरलार्थ — चाणक्य इस पंकित के माध्यम से चन्द्रगुप्त को कहना चाहते हैं कि वहह चन्द्रगुप्त मनुष्य को बड़ा आदमी बनने के लिए त्याग की जरूरत पड़ती है। घर, समाज, परिवार, दोस्त, एवं प्रेमिका तक को कुर्बानी देनी पड़ती है। तभी मनुष्य अपने लक्ष्य में कामयाब हो पाता है। इसलिए कहा गया है "महत्वाकांक्षा (इच्छा) का मोती निष्ठुरता के सीपी में रहता है"। युद्धभूमि में विजय पाने के लिए खून की नदी बहती है, न जाने कितने माताएँ अपना पुत्र खोती हैं। पत्नी अपने पति खोता है, बहन अपना भाई खोता है। तब जाकर युद्ध में विजय होता है और नया साम्राज्य की स्थापना होती है। इसलिए तुम साधारण सी कन्या "कल्याणी" और "मालविका" के लिए चिंतित न हो।

भावार्थ — जयशंकर प्रसाद जी नाटक के माध्यम से भारतवासी को जगाना चाहते हैं कि इसी आर्यावर्त

व्याख्या

भूमि से फिरंगियों को खदेड़ कर वापस भेज दिया गया था। क्या तुम्हें वह अतीत से भी कमजोर हो जो साधारण अंग्रेजों के सामने नत मस्तक किये हुए हो। अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए पूरी शक्ति लगा दो।

"अमर्त्य वीर पुत्र हो
दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है
बढ़े चलो, बढ़े चलो"
असंख्य कीर्ति रश्मियाँ
विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत-मातृभूमि के
रुको न शूर साहसी
अराती सैन्य सिन्धु में
सुवाड वाग्नि में जलो
प्रवीर हो जयी बनो
बढ़े चलो, बढ़े चलो"

कठिन शब्दों के अर्थ बोध — निष्ठुरता – दयाहीन (संधा
महत्वाकांक्षा – इच्छा (ल
सीपी — सिधुआ (गोद
अमर्त्य — जो कभी न मरे
प्रवीर — वीरों के वीर

बलवन्त
कुमार